तां पुण्यदर्शनां दृष्ट्वा निमित्तज्ञस्तपोनिधिः ।

याज्यमाशंसितावन्ध्यप्रार्थनं पुनरब्रवीत् ।।86।।

अन्वय निमिनज्ञः तपोनिधिः पुण्यदर्शनां तां दृष्ट्वा आशंसितावन्ध्यप्रार्थनं याज्यं पुनः अब्रवीत्।

अनुवाद शकुनशास्त्र के विद्वान तपस्वी वशिष्ठ पवित्र दर्शन वाली आई हुई उस नन्दिनी गौ को देखकर यजमान दिलीप से, जिनकी (पुत्र प्राप्ति रूपी) मनोरथ की प्रार्थना (चाह) अवश्य सफल होने वाली थी, पुनः इस प्रकार बोले।

टिप्पणियाँ

दृष्ट्वा धातु दृश् क्त्वा, देखकर।

निमित्तज्ञः निमित्तं जानाति इति (निमित ज्ञ क) जो शकुनशास्त्र का ज्ञाता है, महर्षि वशिष्ठ का विशेषण। इस विशेषण की विशिष्टता यही है कि जैसे ही ऋषि वशिष्ठ ने गाय को देखा त्यों ही वे समझ गए कि राजा की मनोकामना की सिद्धि समीप ही थी।

याज्यम् याजयितुं योग्यम्, धातु यज् णिच् जिसके लिए यज्ञ किया जाता है। यजमान।

आशंसित आशंसिता (मनोरथ) अवन्ध्या (सफल) प्रार्थना यस्य सः (बहुव्रीहि तम्) 'याज्यं' (राजा) का विशेषण है जिसका मनोरथ (पुत्र प्राप्ति रूप) सफल होने वाला है जिसकी पुत्र प्राप्ति की मनोकामना पूर्ण होने को है। अन्य मतानुसार इसका विग्रह 'आशंसिता अवन्ध्या प्रार्थना यस्य तम्' भी किया जा सकता है। अतः 'आशंसिता' का अर्थ होगा 'सूचित' और 'अवन्ध्या' का निष्फल नहीं (होना)।